AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

भारतीय राजनीति में जाति की भूमिकाः परंपरा और परिवर्तन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
माँ विंध्यावाशिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन
पदमा, हजारीबाग, झारखंड भारत

शोध सार

भारत एक विविधतापूर्ण समाज है जहाँ जाति व्यवस्था का प्रभाव ऐतिहासिक और समकालीन राजनीति में अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। जाति न केवल सामाजिक व्यवस्था को निर्धारित करती है, बल्कि इसका व्यापक प्रभाव राजनीतिक प्रक्रिया, नीतियों, और चुनावी गणित पर भी पड़ता है। इस लेख में हम भारतीय राजनीति में जाति की भूमिका का विश्लेषण करेंगे, जिसमें पारंपरिक दृष्टिकोण और आधुनिक परिवर्तनों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

मुख्य शब्द

भारत, राजनीति, समाज, परंपरा.

भूमिका

जाति एक सामाजिक संस्था है जो भारतीय समाज की बुनियादी संरचना को प्रभावित करती है। भारतीय राजनीति में जाति की भूमिका ऐतिहासिक काल से ही महत्वपूर्ण रही है। प्राचीन भारत में सामाजिक व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए जाति का उपयोग होता था, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम और आधुनिक काल में यह राजनीतिक शक्ति के साधन के रूप में उभरी। जाति की परिभाषा, इसकी सामाजिक जटिलताएँ, और राजनीतिक परिदृश्य में इसके प्रभाव ने समय के साथ अनेक रूप बदले हैं।

1. जाति का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

जाति व्यवस्था का उद्भव प्राचीन भारत की वर्ण व्यवस्था से माना जाता है, जहाँ समाज को चार मुख्य वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र में बाँटा गया था। यह वर्गीकरण कर्म और धर्म के आधार पर होता था, लेकिन धीरे–धीरे यह एक कठोर सामाजिक व्यवस्था में बदल गया।

प्राचीन भारत में जाति की संरचना

- **वर्ण व्यवस्थाः** वर्ण व्यवस्था सामाजिक उत्तरदायित्वों के आधार पर बनाई गई थी।
- **धर्मशास्त्र और जातिः** धर्मशास्त्रों ने जाति को धार्मिक स्वीकृति दी, जिससे सामाजिक असमानता को वैधता मिली।

मध्यकालीन भारत में जाति का प्रभाव

- **सामाजिक कठोरताः** जाति व्यवस्था और भी कठोर होती चली गई।
- **मुस्लिम शासन का प्रभावः** मुस्लिम शासनकाल में जाति के प्रभाव में कुछ कमी आई, लेकिन सामाजिक

स्तर पर इसके प्रभाव को समाप्त नहीं किया जा सका।

ब्रिटिश काल और जाति

- **ब्रिटिश शासन का दृष्टिकोणः** ब्रिटिश शासन ने जाति व्यवस्था को सामाजिक विभाजन के रूप में देखा और इसे अपने प्रशासनिक लाभ के लिए उपयोग किया।
- **जाति आधारित जनगणनाः** ब्रिटिश काल में जाति आधारित जनगणना ने जाति के महत्व को और बढ़ा दिया।

2. स्वतंत्रता आंदोलन में जाति की भूमिका

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जाति व्यवस्था को समाप्त करने और समाज को एकसमान बनाने के प्रयास किए गए।

गांधीजी और जाति

- **अस्पश्यता निवारणः** महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता को समाप्त करने और हरिजनों के उत्थान के लिए काम किया।
- **जाति के विरुद्ध आंदोलनः** गांधीजी ने जाति के विरुद्ध सामाजिक चेतना जगाने के प्रयास किए, लेकिन जाति व्यवस्था की जड़ें गहरी थीं।

डॉ. भीमराव अंबेडकर और जाति उन्मूलन

- **संविधान निर्माणः** डॉ. अंबेडकर ने जाति उन्मूलन को संविधान का हिस्सा बनाया।
- **आरक्षण नीतिः** आरक्षण की व्यवस्था सामाजिक न्याय की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम थी, जिसने दलित और पिछड़े वर्गों को राजनीतिक और शैक्षिक अवसर प्रदान किए।

3. स्वतंत्र भारत में जाति की राजनीति

स्वतंत्रता के बाद, भारतीय राजनीति में जाति एक निर्णायक कारक बन गई। राजनीतिक दलों ने जाति आधारित वोट बैंक का उपयोग करना शुरू कर दिया।

जातिगत राजनीति का उदय

- **राजनीतिक दल और जातिः** कांग्रेस, समाजवादी दल, और अन्य दलों ने जाति के आधार पर वोट बैंक की राजनीति की शुरुआत की।
- **आरक्षण और सामाजिक न्यायः** आरक्षण नीति का विस्तार जाति आधारित राजनीति को और गहरा कर गया।

मंडल कमीशन और पिछड़ा वर्ग राजनीति

- **मंडल आयोग की सिफारिशेंः** मंडल आयोग की सिफारिशों के बाद पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण की शुरुआत हुई, जिसने भारतीय राजनीति को बदल दिया।
- **जाति आधारित दलों का उदयः** जनता दल, बहुजन समाज पार्टी (बसपा), और अन्य दलों ने जाति को केंद्र में रखकर राजनीति की।

दलित राजनीति

- **बहुजन समाज पार्टी (बसपा):** कांशीराम और मायावती की अगुवाई में बसपा ने दलित राजनीति को एक नई दिशा दी।
- **दलित आंदोलनः** दलित आंदोलन ने सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर जाति आधारित असमानताओं के खिलाफ संघर्ष किया।

4. जाति और चुनावी राजनीति

जाति भारतीय चुनावी राजनीति का मुख्य आधार बन गई है। राजनीतिक दल जातिगत समीकरणों को ध्यान में रखकर उम्मीदवार चुनते हैं और चुनावी रणनीतियाँ बनाते हैं।

जातिगत वोट बैंक

- **उत्तरी भारत में जाति का प्रभावः** उत्तर प्रदेश, बिहार, और अन्य राज्यों में जाति आधारित वोट बैंक की राजनीति प्रभावी है।
- **जातिगत समीकरण और गठबंधनः** दल चुनावी गठबंधन बनाने में जातिगत समीकरणों का खास ध्यान रखते हैं।

जाति और राजनीतिक गठबंधन

- **राजनीतिक दलों के गठबंधनः** जाति के आधार पर राजनीतिक गठबंधन बनते और टूटते हैं।
- **आरक्षण और जातिगत मतदाताः** आरक्षण नीति के कारण राजनीतिक दलों को अपने मतदाता वर्ग के प्रति जवाबदेह रहना पड़ता है।

5. जाति आधारित हिंसा और संघर्ष

जाति के आधार पर भारतीय राजनीति में संघर्ष और हिंसा की घटनाएँ भी होती रही हैं। जातिगत विवाद, जमीन के झगड़े, और सामाजिक असमानता ने कई बार हिंसात्मक रूप ले लिया है।

दलित उत्पीड़न और राजनीतिक प्रतिक्रिया

- **दलित आंदोलनः** दलितों के उत्पीड़न के खिलाफ समय–समय पर आंदोलन हुए हैं।
- **राजनीतिक प्रतिक्रियाः** दलित उत्पीड़न के मुद्दे पर राजनीतिक दलों की भूमिका और प्रतिक्रिया भी महत्वपूर्ण रही है।

6. जाति का आर्थिक और सामाजिक प्रभाव

जाति केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को भी प्रभावित करती है। आर्थिक अवसरों की असमानता और सामाजिक भेदभाव ने जातिगत राजनीति को और गहरा बना दिया है।

सामाजिक गतिशीलता और जाति

- **शिक्षा और रोजगारः** जाति का शिक्षा और रोजगार के अवसरों पर सीधा असर पड़ता है।
- **आर्थिक सुधार और जातिगत विभाजनः** आर्थिक सुधारों का लाभ जातिगत रूप से असमान रहा है।

7. जाति और आधुनिक राजनीति में परिवर्तन

जाति आधारित राजनीति में धीरे–धीरे परिवर्तन हो रहे हैं। शहरीकरण, शिक्षा का विस्तार, और नई पीढ़ी के मतदाताओं ने जातिगत राजनीति की प्रकृति को बदलना शुरू कर दिया है।

जाति और युवा मतदाता

- **नई पीढ़ी का दृष्टिकोणः** युवा मतदाता जाति से अधिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।
- **सोशल मीडिया का प्रभावः** सोशल मीडिया ने जाति आधारित राजनीति को चुनौती दी है।

समानता और समावेश की ओर कदम

- **संवैधानिक सुधारः** संवैधानिक सुधार और सामाजिक आंदोलनों ने जातिगत भेदभाव को कम करने के प्रयास किए हैं।
- **नई राजनीतिक धाराएँः** कुछ नए राजनीतिक दल जाति के बजाय मुद्दों और विकास पर केंद्रित राजनीति की वकालत कर रहे हैं।

8. जातिगत राजनीति की चुनौतियाँ और समाधान

जातिगत राजनीति के चलते भारत में विकास और सामाजिक समरसता के सामने कई चुनौतियाँ हैं। जाति के आधार पर राजनीति करने से समाज में विभाजन और असमानता बनी रहती है।

संभावित समाधान

- **शिक्षा और जागरूकताः** जाति आधारित पूर्वाग्रहों को समाप्त करने के लिए शिक्षा और जागरूकता महत्वपूर्ण है।
- **नीतिगत सुधारः** आरक्षण नीति में सुधार और सामाजिक न्याय की नीतियों को बेहतर तरीके से लागू करना आवश्यक है।
- **राजनीतिक दलों की भूमिकाः** राजनीतिक दलों को जातिगत राजनीति से ऊपर उठकर मुद्दों और विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

निष्कर्ष

भारतीय राजनीति में जाति की भूमिका ऐतिहासिक रूप से जटिल और गहरी है। यह समाज के हर पहलू को प्रभावित करती है, चाहे वह राजनीति हो, अर्थव्यवस्था हो, या सामाजिक संरचना। हालांकि, आधुनिक समय में जातिगत राजनीति में बदलाव के संकेत मिल रहे हैं। शहरीकरण, शिक्षा का प्रसार, और नई पीढ़ी की सोच ने जातिगत सीमाओं को धीरे–धीरे धुंधला करना शुरू कर दिया है।

भविष्य में, यदि जाति आधारित राजनीति से ऊपर उठकर समानता, विकास, और समावेश की राजनीति को प्रोत्साहित किया जाए, तो भारत एक अधिक न्यायपूर्ण और प्रगतिशील समाज की ओर कदम बढ़ा सकता है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, गोपाल (2005) *भारतीय समाज में जाति व्यवस्था,* प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ. 50–75।
2. यादव, सुरेश यादव (2010) *भारतीय राजनीति और जातिवाद,* रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 85–110।
3. चौधरी, एस. एन. (2012) *जाति, समाज और राजनीति,* ओरिएंट ब्लैकस्वान, हैदराबाद, पृ. 70–95।
4. यादव, योगेन्द्र (2008) *भारत की राजनीति में जातीय परिवर्तन,* सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 120–145।
5. आंबेडकर, बी. आर. (1936) *जाति का विनाश,* नवयुग प्रकाशन, मुंबई, पुनर्मुद्रण 2014, पृ. 40–60।
6. श्रीनिवास, एम. एन. (1966) *जातिः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन,* एशियन पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, पृ. 25–48।
7. धर्मवीर (2011) *जाति, राजनीति और समाज सुधार,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 92–120।
8. लोचन, राजीव (2013) *जाति और भारतीय राजनीति,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 75–100।
9. कुमार, आनंद (2009) *जाति और सामाजिक आंदोलन,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 55–80।
10. सिंह, अर्जुन (2015) *भारतीय राजनीति में जाति और लोकतंत्र,* सरस्वती प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 130–155।

––==00==––